श्रीगणेशाय नमः

अथ

लग्नजातक

भाषाटीका सहित

टीकाकार—

पं० रघुवंश शर्मा।

प्रकाशक

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर

राजादरवाजा, वाराणसी-१

फोन ६४६५०   मूल्य १)२० पैसे

* श्रीः *

लग्नजातक

भाषाटीका सहित

टीकाकार—पं० रघुवंश शर्मा

प्रकाशक :—

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर
राजादरवाजा, वाराणसी ।

मूल्य : १)२० पैसा

* अथ *

* लग्नजातक *

—:o:—

(भाषानुवादसमलंकृत)

तुलालिकुम्भोऽजकुलीरलग्ने वेद्यं प्रसूता गृहपूर्वद्वारे। कन्याधनुर्मीननृयुग्मलग्ने स्यादुत्तरद्वारप्रतीचिगोरथ ॥ १ ॥

अर्थ—जन्मके समय यदि तुला, वृश्चिक, कुम्भ, मेष तथा कर्क लग्न हों तो सूतिकागार (प्रसवस्थान) का द्वार पूर्वमुख का जानना। कन्या, धन, मीन, मिथुन इन लग्नों में बालक का जन्म हो तो सूतिका का गृहद्वार उत्तर मुख का जानना, वृष लग्न में पश्चिम मुख का कहना ॥ १ ॥

मृगारिलग्ने मकरे तथापि भवेत्प्रसूता गृहदक्षिणस्याम्। एवं हि लग्नात्परिचिन्तनीयं सूतीगृहद्वारमिदं प्रदिष्टम् ॥ २ ॥

अर्थ—सिंह, मकर लग्न में प्रसूती (जच्चा का घर) दक्षिणा मुख का होता है ऐसे तात्कालिक लग्न से सूतिका के घर का द्वार निश्चय करके कहना चाहिये ॥ २ ॥

मेषालिकर्कघटकुम्भजऐन्द्रभागे
जीवज्ञवेश्मनि तथोत्तरभागके च ।
नक्रे हरौ यमदिशासु वृषे प्रतीच्यां
तद्वास्तुनीति वसति प्रवदेत्प्रसूत्याः ॥३॥

अर्थ—मेष, वृश्चिक कर्क, तुला, कुम्भ, ये राशि लग्न में हो अथवा इनका नवांश जन्म समय हो तो वास्तु से पूर्व भाग में जन्म कहना और धन, मीन, मिथुन, कन्या ये लग्न हो अथवा इनके नवांश जन्म समय में हो तो वास्तु से उत्तर भाग में तथा मकर व सिंह लग्न हो अथवा इनका नवांश हो तो वास्तु से दक्षिण भाग में, वृष, लग्न, हो या वृष का नावांश हो तो वास्तु से पश्चिम और सूतिका का घर कहना ॥ ३ ॥

मीने मेषे च द्वे नार्यौ चत्वारि वृषकुम्भयोः ।
मकरे मिथुने पञ्चबाणाश्च धन कर्कयोः ।
अन्यलग्ने त्रयो नार्यः प्रवदन्ति मनीषिणः ॥ ४ ॥

अर्थ—मीन और मेष लग्न में जन्म हो तो दो स्त्री सूतिका के निकट कहना, वृष कुम्भ लग्न में जन्म हो तो चार स्त्री सूतिका स्त्री के समीप कहना । मकर, मिथुन में पाँच स्त्री और धन, कर्क लग्न में भी पाँच स्त्री कहना । अन्य (सिं० क० तु० वृश्चिक) लग्नों में जन्म हो तो तीन स्त्रियाँ प्रसूता के समीप होती हैं ऐसा पण्डित जन कहते हैं ॥ ४ ॥

लग्नचन्द्रान्तगैनस्थैर्ग्रहैस्तत्रोपसूतिकाः ।
बहिरन्तश्च चक्रार्द्धे दृश्यादृश्येऽन्यथापरे ॥ ५ ॥

अर्थ—जन्म समय लग्न और चन्द्रमा के बीच में जितने ग्रह विद्यमान हों उतनी स्त्री सूतिका के समीप कहना और चक्रार्द्ध अर्थात् लग्न से सातवें स्थान पर्यन्त जितने ग्रह स्थित हों उतनी स्त्रियाँ समीप भीतर जानना तथा आठवें स्थान से बारहवें स्थान पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी स्त्रियाँ सूतिका के घर से बाहर होंगी ॥ ५ ॥

अङ्गे चन्द्रे ग्रहमात्रादृष्टे निर्जने प्रसवः ।

अर्थ—लग्नमें चन्द्रमा हो और उसे कोई ग्रह न देखता हो तो जन्म के समय वहाँ कोई नहीं था ऐसा कहना ।

स्वोच्चवक्रोपगैस्त्रिघ्नाःस्वस्थैर्द्विघ्नास्तदंशगैः ।
तथैव ग्रहतुल्यं स्याद्वयोजातिस्वरूपकम् ॥ ६ ॥

अर्थ—अपनी उच्च राशि में वक्र गति से जितने ग्रह हों उनकी तिगुनी स्त्रियाँ कहना । अपनी राशि में व अपने नवांश में व अपने द्रेष्काण व अपने वर्गोत्तम में जितने ग्रह हों उनकी दुगुनी स्त्रियाँ प्रसूता स्त्री के समीप कहनी चाहिये और उन स्त्रियों की अवस्था, जाति, स्वरूप उन ग्रहों के सदृश कहना । ग्रहों का स्वरूप आदि आगे कहेंगे ॥ ६ ॥

पापैश्च विधवा नारी क्रूरैरपि कुमारिका
सौम्यग्रहैश्च सुभगा सूतिकायां विधीयते ॥७॥

अर्थ—पापग्रहों से विधवा स्त्री क्रूर ग्रहोंसे कुमारी और शुभ ग्रहोंके योगसे सौभाग्य वाली अर्थात् सुहागिन स्त्री, इनकी संख्या ग्रहों की संख्या के अनुसार सूतिका के समीप कहना ॥ ७ ॥

बालां पूर्णः शीतगुः सोमजोऽपि
वृद्धां सौरिः कर्कशां भूमिपुत्रः
आदित्येज्यौ सुप्रसूनां भृगुश्च
कुर्वाते स्त्री कर्कशां चापि वृद्धाम् ॥ ८ ॥

अर्थ—लग्न और चन्द्रमा के बीच ग्रहों के योग से जो उपसूतिका-ज्ञान कहा, सो पूर्ण चन्द्रमा और बुध हो तो बाला स्त्री, शनि हो तो वृद्धा, मंगल हो तो कलह करने वाली स्त्री, सूर्य या गुरु हों तो सुन्दर सन्तान वाली स्त्री, शुक्र हो तो कलह जिसको प्यारा हो ऐसी स्त्री और वृद्धा भी कहना। "आषोडशाद्भवेद्बाला तरुणी त्रिंशका मता पञ्चपञ्चाशका प्रौढ़ा नारी वृद्धा ततः परम्" सोलह वर्ष पर्यंन्त बाला, तीस तक तरुणी, पचपन वर्ष तक प्रौढ़ा इसके उपरान्त स्त्री वृद्धा कही जाती है ॥ ८ ॥

शब्दो मेषे वृषे सिंहे मिथुने वा तथा तुले।
घटकन्ययोरर्धशब्दः शेषा शब्दविवर्जिताः ॥ ९ ॥

अर्थ—जो मेष, वृष, सिंह, मिथुन तथा तुला इन लग्नों में जन्म हो तो बालकने शब्द किया (बालक रोया) और कुम्भ कन्या लग्न हो तो आधा शब्द किया अर्थात् कुछ रोकर चुप रहा, शेष लग्न (कर्क, वृश्चिक, धन, मकर, मीन) हों तो बालक रोया नहीं ऐसा कहना ॥ ९ ॥

मेषात्रिपञ्चाननतौलिलग्ने विस्मृत्य सर्वं बहु-

रोदिति स्म। स्वल्पं घटे स्त्री शिशुरन्यलग्ने-
रूध्र्वोद्धि नो ज्ञानबलस्य सत्त्वात् ॥ १० ॥

अर्थ—मेष, मिथुन, सिंह, तुला इन लग्नों में बालक का जन्म हो तो वह बालक सब ज्ञान को भूलकर बहुत रोता है और कुम्भ व कन्या लग्नमें उत्पन्न हो तो बालक थोड़ारुदन करता है, अन्य लग्नों (वृष, कर्क, वृश्चिक, धन, मकर मीन) में उत्पन्न बालक ज्ञानबल के प्रभाव से नहीं रोता है ॥ १० ॥

मेषे सिंहे धनुः कर्के कन्यामीने तथा तुले।
अन्तरिक्षे भवेज्जन्म शेषे भूमिर्निगद्यते ॥ ११ ॥

अर्थ—मेष, सिंह धन कर्क कन्या, मीन तथा तुला इन लग्नों में जन्म हो तो शय्या पर जन्म कहना और शेष लग्नों (वृष, मिथुन, वृश्चिक मकर, कुम्भ) में बालक उत्पन्न हो तो पृथ्वी पर जन्म कहना ॥ ११ ॥

द्वौ द्वौ क्रियादिन्द्रमुखादिदिक्षु
द्विमूर्तयः कोणगता भवन्ति।
या जन्मकाले सति लग्नवर्ती
तद्दिग्गतं स्याच्छयनं प्रसूत्या ॥ १२ ॥

अर्थ—मेष से दो, दो राशि जन्म लग्न हो तो यथाक्रम से पूर्व आदि चारों दिशाओं में, द्विःस्वभाव राशि लग्न में हो तो यथाक्रम से आग्नेय आदि कोणों में सूतिका का शयनस्थान कहना अर्थात् मेष, वृष लग्नसे घर के पूर्व में, मिथुन लग्न से आग्नेय

कोण में कर्क, सिंह लग्नसे दक्षिण में, कन्या लग्न से नैर्ऋत्य में तुला, वृश्चिक लग्न से पश्चिम में, धन लग्न से वायव्य में, मकर कुम्भ लग्न से उत्तर में, मीन लग्न से ईशान कोण में सूतिका का शयनस्थान कहना ॥ १२ ॥

अथवा—उक्तं च बृहज्जातके

प्राच्यादिगृहे क्रियादयो द्वौ द्वौ कोणगता द्विमूर्तयः। शय्यास्वपि वास्तुवद्वदेत्पादैः षट्त्रिनवान्त्यसंस्थितैः ॥ १३ ॥

अर्थ दो बातों का विचार इस श्लोक द्वारा करना। प्रथम यह कि, बालक का जन्म घर के किस भाग में हुआ है, दूसरे यह कि शय्या का सिरहाना किस ओर को है, यह विचार इस प्रकार करना कि मेष, वृष से पूर्व, मिथुन से अग्नि कोण की ओर कर्क सिंह से दक्षिण, कन्या से नैर्ऋत्यकोण, तुला, वृश्चिक से पश्चिम धन से वायुकोण, मकर, कुम्भ से उत्तर, मीन से ईशान कोण की ओर जन्म व शय्या का सिरहाना कहना, यहाँ छठें तीसरे नवें बारहवें स्थान मे शय्या के चारों पाये कहना—अर्थात् बारहवें स्थान मे सिरहाने के बायाँ पाया, छठें घर से शय्या के पाँयते का दाहिना पाया, नवें से बायाँ पाया, तिसरे घर से सिरहाने का दाहिना पाया, जहाँ पापग्रह निर्बल हों वहाँ पर प्रसूतिका का घर व शय्या का अंग बलहीन व टूटा, छिटका जानना और जहाँ शुभ ग्रह बलवान् हों वहाँ पुष्ट और सुन्दर कहना। मिश्रित होने से सामान्य कहना ॥ १३ ॥

छागे सिंह वृषे लग्ने वृश्चिके नालवेष्टितः ।
नृलग्ने दक्षिणे पार्श्वे वामे स्त्रीलग्नके तथा ॥१४॥

अर्थ—मेष, सिंह, वृष, वृश्चिक इन लग्नों में बालक का जन्म हो तो नाल लिपटा हुआ जन्म कहना पुरुष लग्न से दाहिनी ओर तथा स्त्री (सम) लग्न से बांई ओर लिपटा कहना ॥ १४ ॥

छागे सिंह वृषे लग्ने तत्स्थे मन्देऽथवा कुजे ।
राश्यंशसदृशे गात्रे जायते नालवेष्टितः ॥ १५ ॥

अर्थ—जो मेष, सिंह, वृष इन लग्नों से जन्म हो और लग्न में शनि वा मंगल स्थित हो तो लग्न स्थित नवांशक की राशि के अङ्ग में नाल लिपटा हुआ कहना' अङ्ग का ज्ञान नीचे लिखे चक्र से जानना परन्तु जिस लग्न में बालक का जन्म हो वह शिर जानना इत्यादि ॥ १५ ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
शिर	मुख	बाहु	हृदय	उदर	कटि	बस्ति	लिंग	ऊरु	जानु	जंघ	चरण

यत्र राहुस्तत्र शीर्षे मङ्गले भूमिखण्डनम् ।
रविस्थाने भवेद्दीपः शनौ लोहं निगद्यते ॥ १६ ॥

अर्थ— जन्म समय लग्न से जहाँ राहु स्थित हो उस दिशा में बालक का शिर कहना, जिस दिशा में मंगल हो वहाँ पर भूमि खण्डित अथवा गड्ढा कहना जहाँ सूर्य हो उस दिशा में दीपक कहना मति के अनुसार कहना, यहाँ जन्म लग्न को पूर्व दिशा

चौथे स्थान को उत्तर दिशा, दशवें स्थान को दक्षिण दिशा, सातवें स्थान को पश्चिम दिशा कल्पना करके चार कोण भी जान लेना यहाँ कोई ऐसा भी कहते हैं कि सूर्य रात्रि दिन में पूर्वआदि आठों दिशाओं में घूमता है उस समय संचारवश से जिस दिशा में सूर्य हो उस दिशा में दिपक कहना । १६

चन्द्रात्तैलज्ञानमेवं विचार्य बुद्ध्या सर्वं सूतिका वेश्मनीह । लग्नारम्भे वर्तिका पूर्णदेहा मध्ये त्वर्द्धा स्वल्पशेषाऽवसाने ॥ १७ ॥

अर्थ---चन्द्रमा से दीपक के तेल का विचार करना, चन्द्रमा पूर्ण हो तो दीपक में तेल भरा हुआ कहना मध्यम हो तो आधा, क्षीण चन्द्रमा हो तो थोड़ा अथवा चन्द्रमाके अंशों के अनुसार कहना, पूर्ण दीपक में जितने २ अंश चन्द्रमा के कम होते जायँ उतना ही तेल कम होता जायगा, इस प्रकार अपनी बुद्धि से सूतिका के घर में सब विचार करना, लग्न से दीपक की बत्ती का विचार करना, जैसे कि लग्नके आरम्भ में जन्म हो तो बत्ती पूर्ण जानना—अर्थात् बत्ती उसी समय जलायी गयी, आधा लग्न व्यतीत हो जाने पर आधी बत्ती और थोड़े अंश शेष रह गये हों अर्थात् लग्नके अन्त में कुछ बत्ती रह गयी ऐसा कहना ॥१७॥

चरर्क्षगे रवौ तदा चरं प्रदीपकं वदेत् ।
स्थिरर्क्षभे स्थितं वदेद्द्विदेहभेद्विधातदा॥१८॥

अर्थ—चरराशि में सूर्य हो तो दीपक चलायमान रहा ऐसा कहना, स्थिर राशि में सूर्य हो तो दीपक एक स्थान में स्थित

रहा द्विस्भाव राशि में सूर्य हो तो चरस्थिर अर्थात् एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर रख दिया गया ॥ १८ ॥

चरलग्ने चरो दीपः स्थिरे स्वस्थानसंस्थितः ।
द्विदेहभेकरस्थः स्यादिति केचिद् बुधाजगुः ॥१९॥

अर्थ--चर लग्न में जन्म हो तो दीपक चलायमान रहा, स्थिर लग्न हो तो अपने स्थान में स्थिर रहा, द्विःस्वभावराशि में हाथ में दीपक रहा ऐसा किन्हीं पण्डितों ने कहा है १९।

राश्यादिके चंद्रमसि प्रदीपस्तैलेन पूर्णोऽस्ति वदेद् बुधाग्रयः । तथैव मध्यांतगतेशशाङ्के मध्यत्वमल्पत्वमुपैति दीपः ॥ २० ॥

अथ--स्पष्टता के लिये फिर भी तैल ज्ञान कहते हैं राशि के आदि में अर्थात् दश अंश के भीतर चन्द्रमा हो तो तेल से परिपूर्ण दीपक कहना, ऐसे ही राशिके मध्यमें अर्थात् ग्यारह अंश से बीस अंश के भीतर चन्द्रमा हो तो दीपक में आधा तेल कहना राशि के अन्त में अर्थात इकीस अंश से तीस अंश के भीतर चन्द्रमा हो तो पण्डितजन दीपक में तेल थोड़ा कहें २०

शीर्षोदये विलग्ने मूर्धाप्रसवोऽन्यथोदये चरणौ ।
उभयोदयेचहस्तौशुभदृष्टः शोभनोऽन्यथाकष्टः॥२१॥

अर्थ--शीर्षोदय लग्नमें जन्म हो तो शिर से और पृष्ठोदय लग्न में जन्म हो तो चरण से उभयोदय लग्न में जन्म हो तो हाथों से जन्म कहना शिर से जन्म होना यह कि प्रथम शिर

बाहर को निकले, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, मिथुन, कुम्भ ये शीर्षोदय राशि हैं, मीन उभयोदय है, शेष, मेष, वृष कर्क धन, मकर ये पृष्ठोदय राशि हैं, लग्न पर शुभग्रहों की दृष्टि हो तो सुखसे प्रसव कहना और क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो कष्टसे जन्म कहना २१॥

पितुर्जातः परोक्षेऽस्य लग्नमिंदावपश्यति ।
विदेशस्थस्य चरभे मध्याद्भ्रष्टे दिवाकरे ॥२२॥

अर्थ—जो जन्म समय लग्न का चन्द्रमा नहीं देखे तो उस समय के उत्पन्न हुए बालक का जन्म पिता के परोक्ष (पीछे) कहना और मध्य से भ्रष्ट अर्थात दसवें स्थान से रहित (नवम) अष्टम एकादश, द्वादश स्थानों में सूर्य चर राशि का हो तो बालक के जन्म समय पिता विदेश में स्थित रहता है ।२२॥

स्थिरे सूर्येऽष्टमे धर्मे लाभे वा चान्त्यसंस्थिते ।
न पश्येच्चन्द्रमा लग्नं परोक्षे जायते शिशुः ॥२३॥

अर्थ—सूर्य स्थिर राशि का होकर आठवें, नवे, ग्यारहवें, बारहवें स्थान में हो और चन्द्रमा लग्न को न देखता हो तो भी पिता के पीछे बालक का जन्म कहना, परन्तु अपने देश में स्थित परोक्ष कहना ॥ २३ ॥

उदयस्थेऽपि वा मन्दे कुजे वास्तं समागते ।
स्थिते वान्तःक्षपानाथे शशांकसुतशुक्रयोः ॥२४॥

अर्थ—अथवा जन्म लग्न में शनैश्चर हो, यद्वा सप्तम स्थान में मंगल हो, किंवा बुध और शुक्र के मध्य में चन्द्रमा स्थित हो

इन तीन योगों में पिता के पीछे बालक जन्म कहना ॥ २४ ॥

क्रूर्क्षगतावशोभनौ सूर्याद्द्यूननवात्मज-
स्थितौ । बद्धस्तु पिता विदेशगः स्वे वा
राशिवशादथोपथि ॥ २५ ॥

अर्थ—जो पापग्रह क्रूर राशि (मेष, सिंह वृश्चिक, मकर कुम्भ) में सूर्य से सातवें नवें, पाँचवें स्थान में स्थित हों तो बालक का पिता बंधन में कहना । यहाँ जो सूर्य चर राशि में स्थित हो तो परदेश; स्थिर राशि में हो तो अपने देश में और द्वि स्वभाव राशि में हो तो मार्ग में बँधा कहना ॥ २५ ॥

मेषे रक्तं वृषे श्वेतं मिथुने नीलवर्णकम् ।
कर्कटे श्वेतरक्तं च सिंहे धूम्रं च पाण्डुरम् ॥२६॥
कन्यायां चित्रवर्णं च तुले धूम्रं प्रकीर्तितम् ।
पिशङ्गो वृश्चिके ज्ञेयः पिङ्गलो धनुषस्तथा ॥२७॥
कर्बुरो मकरे ज्ञेयो बभ्रुवर्णं घटे वदेत् ।
मीनवर्णो झषे ज्ञेयो राशिवर्णान्वदद्बुधः ॥२८॥

अर्थ—मेष में लाल रङ्ग, वृष में सफेद रंग, मिथुन में नील रंग, कर्क में सफेद व लाल रंग, सिंह में धूम्र और पाण्डुर वर्ण कन्या में विचित्र वर्ण अर्थात् अनेक रंग और तुला में धुआँ कासा रंग, वृश्चिक में पीला रंग, धनु में पीला रंग तथा मकर में कबरा अर्थात् अनेक रंग मिला हुआ जानिये । कुम्भ में न्योला कासा रंग कहना । मीन में मछली कासा रंग जानना,

पण्डितजन इस प्रकार राशियों के रंगों को कहें, इसका प्रयोजन यह है कि प्रसूता स्त्री के भोजन का रङ्गलग्न द्वारा बतादे, कोई-कोई पण्डित प्रसूता के वस्त्र का रङ्ग राशिवर्ण द्वारा बतलाते हैं इस प्रकार बुद्धि द्वारा यथायोग्य विचार करके बतलाना चाहिये॥२८॥

न लग्नमिन्दुं च गुरुर्निरीक्षिते
न वा शशाङ्कं रविणा समागतम्।
स पापकोऽर्केण युतोऽथवा शशी
परेण जातं प्रवदन्ति निश्चयात् ॥२९॥

अर्थ—जो लग्न और चन्द्रमा को बृहस्पति नहीं देखता हो, अथवा चन्द्रमा सूर्य के साथ हो और बृहस्पति की दृष्टि न हो और सूर्य चन्द्रमा ये दोनों पापग्रह (शनि मंगल) से युक्त एकत्र हों तो निश्चय करके उस बालक का जन्म दूसरे से हो, ऐसा कहते हैं, परन्तु यह जारजात विषयक विचार विशेष आवश्यक नहीं, इस कारण यहाँ केवल एकही योग लिखा है ॥ २९ ॥

आप्योदयमाप्यगः शशि सम्पूर्णः समवेक्षतेऽथवा ।
मेषूरणबन्धुलग्नगःस्यात्सूतिः सलिले न संशयः॥३०

अर्थ–जन्म लग्न और चन्द्रमा जलचर राशि में हों अथवा पूर्ण चन्द्रमा लग्न को पूर्ण दृष्टिसे देखे, अथवा चन्द्रमा जलचर राशिके दशवें,वा चौथे लग्नमें हो तो बालक का जन्म जलके ऊपर कहना ३०

पूर्णे शशिनि स्वराशिगे
सौम्ये लग्नगते गुरौ सुखे ।

लग्ने जलजेऽस्तगेऽपि वा
चन्द्रे पोतगते प्रसूयते ॥ ३१ ॥

अर्थ–पूर्ण चन्द्रमा अपनी राशि (कर्क में हो, बुध लग्न में हो, बृहस्पति चौथे स्थान में हो अथवा लग्नमें जलचर राशि हो चन्द्रमा सातवें हो, तो बालक का जन्म नौकामें कहना ३१॥

उदयोडुपयोर्व्ययस्थिते गुप्त्यां पापनिरीक्षिते शनौ। आलकर्कयुते विलग्नगे सौरौ शीतकरे-क्षितेऽवटे ॥ ३२ ॥

अर्थ--लग्न और चन्द्रमासे बारहवें स्थान में शनि हो और पापग्रह देखते हों तो बालक का जन्म कारागार में कहना तथा वृश्चिक, कर्क का शनैश्चर लग्नमें हो और चन्द्रमा देखता हो तो खाई वा खात में जन्म कहना ॥ ३२ ॥

मन्देऽब्जगते विलग्नगे बुधसूर्येन्दुनिरीक्षिते क्रमात्। क्रीडाभवने सुरालये भवदेज्जन्म च सोषरायनौ ॥ ३३ ॥

अर्थ--जो शनि जलचर राशि में स्थित होकर लग्न में हो और बुध की दृष्टि हो तो नृत्यशाला में, जो शनैश्चर पर सूर्य की दृष्टि हो तो देवालय में चन्द्रमा की दृष्टि हो तो ऊषर भूमि में जन्म हुआ जानना ॥ ३३ ॥

नृलग्नगे प्रेक्ष्य कुजः श्मशाने रम्ये सितेन्दू

गुरुरग्निहोत्रे । रविर्नरेन्द्रामरगोकुलेषु शिल्पालये ज्ञः प्रसवं करोति ॥ ३४ ॥

अर्थ--नर राशि में स्थित शनि लग्न में हो और मंगल देखता हो तो श्मशान में जन्म कहना, नरलग्नगत शनि को शुक्र चन्द्रमा देखते हो तो सुन्दर दर्शन योग्य रमणीक घर में बालक का जन्म कहना, बृहस्पति देखता हो तो अग्निहोत्रशला में जन्म कहना सूर्य देखता हो तो राजमन्दिर वा देवालय वा गोशाला में जन्म कहना, बुध देखता हो तो शिल्पालय (चित्रकारी व कारीगरीसे बने हुए स्थान) में जन्म कहना ॥ ३४ ॥

राश्यंशसमानचरे मार्गे जन्म चरे स्थिरे गृहे ।
स्वर्क्षांशगतेस्वमन्दिरे बलयोगात्फलमंशकर्क्षयोः ॥

अर्थ--जन्म समय लग्नराशि नवांश के समान हो तो भूमि में बालक का जन्म कहना, चर राशिके नवांश में बालक उत्पन्न हो तो मार्ग में, स्थिर राशि के नवांशमें जन्म हो तो अपने घरमें जन्मा । राशि और नवांश इन दोनों में जो बली हो उसीसे फल कहना, परन्तु यह योग तब कहना जब पूर्वोक्त योगों का अभाव हो अर्थात पूर्व कहे हुए योगों में से कोई योग न हो ॥ ३५ ॥

आराऽर्कजयोस्त्रिकोणयोश्चन्द्रेऽस्ते च विसृज्यतेऽम्बया । दृष्टेऽमरराजमंत्रिणा दीर्घायुः सुखभाक् च सः स्मृतः ॥ ३६ ॥

अर्थ--मंगल, शनि ये दोनों त्रिकोण ५ स्थान में स्थित

हों और चन्द्रमा सातवें घर में हो तो उस समय का उत्पन्न बालक अपनी माता से जुदा हो जावे तथा ऐसे योग में चन्द्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो माता का त्यागा हुआ भी बालक दीर्घ आयु और सुखी हो ॥ ३६ ॥

पापेक्षिते तु हिमगौ उदये कुजेऽस्ते
त्यक्तो विनश्यति कुजाऽर्कजयोस्तथा ।
सौम्येऽपि पश्यति तथाविधहस्तमेति
सौम्येतरेषु परहस्तगतोऽप्यनायुः ॥ ३७ ॥

अर्थ—लग्नमें चन्द्रमा स्थित हो और उस पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो मंगल सातवें घर में हो तो वह बालक माता से त्याग किया हुआ मृत्यु को प्राप्त हो; लग्न में स्थित चन्द्रमा पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो और मंगल शनि ग्यारहवें स्थान में हों तो भी पूर्वोक्त फल कहना यदि पूर्व योग हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो उसी ग्रह के वर्ण (ब्राह्मण आदि) के हाथमें वह बालक जावे और बहुत समय तक जीवे जो पापग्रह देखते हों तो अन्य किसी के हाथ आकर वह बालक मर जावे ॥ ३७ ॥

चतुर्थ कर्मणि सौम्या अन्य सुखेन प्रसवंकराः ।
त्रिकोणाऽस्तगते पापा कष्टतः प्रसवंकराः ॥३८॥

अर्थ—जन्म समय लग्नसे चौथे और दशवें स्थानमें शुभग्रह स्थित हों, तो सुख से प्रसव होता है—अर्थात् सुख पूर्वक बालक उत्पन्न होता है त्रिकोण ९।५ स्थान और सातवें स्थान में पापग्रह हों तो माता को बालक उत्पन्न होते समय बहुत कष्ट होता है ॥३८॥

पितृमातृग्रहेषु तद्बलाच्चरुशालादिषु नीचगैः शुभैः। यदि नैकरतैस्तु वीक्षितौ लग्नेन्दू विजने प्रसूयते ॥ ३९ ॥

अर्थ—जो पितृसंज्ञक ग्रह (सूर्य शनि) बली हों तो पिता अथवा पिता के सम्बन्धी चाचा आदिके घर जन्म कहना और जो मातृ-संज्ञक ग्रह (चन्द्र, शुक्र) बली हों तो माता वा मातृसंज्ञक मोसी व मामी के घर बालक का जन्म जानना, यदि शुभग्रह नीच राशि में हों तो वृक्ष तले वा काष्ठ के घर में तथा पर्वत पर या नदी के समीप में जन्म कहना और लग्न तथा चन्द्रमा को कोई भी न देखता हो तो बालक का जन्म निर्जन स्थान में कहना, तथा लग्न व चन्द्रमा को अनेक ग्रह देखते हों तो बहुत से मनुष्यों के समुदाय में जन्म कहना ॥ ३९ ॥

मन्दर्क्षांशे शशिनि हिबुके मंददृष्टेऽब्जगे वा संयुक्ते वा तमसि शयने नीचसंस्थैश्च भूमौ। यद्वद्रा शिर्व्रजति हरिजं गर्भमोक्षस्तु तद्वत् पापैश्चन्द्रात्स्वसुखगतैः क्लेशमाहुर्जनन्या ॥४०॥

अर्थ—जो बालकके जन्म समय चन्द्रमा शनैश्चर की राशि वा नवांशक में हो वा चौथे स्थान में स्थित चन्द्रमा शनिसंयुक्त हो तो अन्धेरे में जन्म कहना, यदि इन योगों में सूर्य बलवान् हो और मङ्गल की दृष्टि हो तो सब योगों का फल कट जाता है अर्थात् सब योग रहते भी घर में जन्म-समय दीपक कहना

अथवा चन्द्रमा लग्न में वा चौथे नीच (८ राशि) का हो तो पृथ्वी पर जन्म कहना, शीर्षोदय राशि जन्म लग्न में हो तो जन्म होते समय बालकका मुख ऊपरको कहना, पृष्ठोदय लग्न होतो पृथ्वी की ओरको अर्थात् नीचेको मुख कहना और उभयोदयी अर्थात् मीन लग्न हो तो बालका जन्म तिरछा कहना, तथा लग्न व नवांश वा लग्नमें स्थित ग्रहवक्री होतो उलटे पैर से बालक का जन्म कहना और पापग्रह युक्त चन्द्रमा सातवें वा चौथे स्थान में हो तो जन्म समय बालक की माता को कष्ट हुआ कहना ॥ ४० ॥

स्नेहः शशाङ्कादुदयाच्च वर्तिर्दीपोऽर्कयुक्तर्क्षवशोच्चराद्यैः द्वारश्च तद्वास्तुनि केन्द्र संस्थैर्ज्ञेयं ग्रहैर्वीर्यसमन्वितैर्वा ॥ ४१ ॥

अर्थ--चद्रमाकी राशिसे दीपका तेल कहना, इसकी रीति कह चुके हैं और जन्म लग्न से दीपक की बत्तीका विचार कहना इसका क्रम भी पूर्व कह आये हैं, सूर्य युक्त राशिके वशसे दीपकका विचार कहना जिस राशिमें सूर्य हो उस राशिके समान तेल का रंग कहना वह राशि शुभग्रहसे युक्त होतो तेल निर्मल और पापग्रहयुक्त होतो तेल मलिन कहना, केन्द्रमें जो ग्रह हो उसकी जो दिशा हो उस ओरको सूतिका के घरका द्वार कहना, अनेक ग्रह केन्द्र में हों तो उसमें से जो ग्रह बली हो उस ग्रह की दिशा में द्वार कहना ॥ ४१ ॥

लग्नेन्दुमध्ये शनिमिष्टतैलं
सूर्यो भवेत्तस्य घृतस्य दीपम् ।

शेषा ग्रहास्तत्कटुकं च तैलं
एवं प्रसूता खलु दीपमाहुः ॥४२॥

अर्थ—लग्न और चन्द्रमाके मध्यमें शनि होता दीपकमें तेल मीठा कहना, सूर्य होतो दीपक में घी जानना और शेष (मं. बु. शु.) हो तो कडुवा तेल कहना, इस प्रकार प्रसूतिका स्त्री के घर में दीप का विचार कहा है ॥ ४२ ॥

जीर्णं संस्कृतमर्कजे क्षितिसुते दग्धं नवं शीतगौ काष्ठाढ्यं न दृढं रवौ शशिसुते तन्नैकशिल्पोद्भवम्। रम्यं चित्रयुतं नवं च भृगुजे जीवे दृढं मन्दिरं चक्रस्थैश्च यथोपदेशरचना सामन्तपूर्वा वदेत् ॥ ४३ ॥

अर्थ—जन्म समय में जो शनैश्चर बली हों तो प्रसूता स्त्री का घर पुराना और अच्छा बना कहना, मंगल बलवान् हो तो दग्ध (जला हुआ) कहना, चन्द्रमा हो तो नवीन अथवा लीपा पोता साफ कहना, सूर्य बलवान् हो तो कच्चा, काष्ठ से भरा हुआ, बुध बली हो तो रमणीय कारीगरी से बना हुआ, शुक्र हो तो सुन्दर चित्रकारी समेत नवीन जानना, बृहस्पति बली हो तो पुष्ट घर कहना जिस ग्रह से यह घर का विचार किया है उसके निकट वा उसके आगे पीछे जितने ग्रह हों उतने कोठे उस घर में आगे पीछे कहे, यहाँ शालाका प्रमाण इस प्रकार कहना कि बृहस्पति उच्च वा दशम भाव में स्थित हो तो तीन चार कोठों का घर कहना,

लग्न में धन राशि बली हो तो तीन कोठोंका, द्विस्वभाव राशि बलवान हो तो शाला का घर कहना, अपनी बुद्धि से घरके निकट शिवालय, कुँवा, वृक्ष आदि ग्रहों के अनुसार वर्णन करना ॥४३॥

लग्ननवांशपतुल्यतनुः स्याद्वीर्ययुतग्रहतुल्यवपुर्वा । चन्द्रसमेतनवांशपवर्णकादिविलग्नविभक्तभगात्रः ॥ ४४ ॥

अर्थ--जन्म समय लग्नमें जो नवांश हो उसके स्वामीके समान बालक का स्वरूप कहना, अथवा जो ग्रह बहुत बलवान् हो उसके समान शरीरका आकार कहना, ग्रहोंका स्वरूप आगे वर्णन करेंगे चन्द्रमा जिसनवांश पर हो उसके स्वामीके सदृशबालककारंग कहना "रक्तश्यामो भास्करो०" इत्यादि श्लोक आगे लिखेंगे, वह ग्रह दीर्घ राशिका स्वामी हो वा दीर्घ राशि में हो तो उस राशि के तुल्य अंग दीर्घ हो, वैसे ही ह्रस्व में ह्रस्व मध्य में मध्य जानना ॥४४॥

ग्रहों का वर्ण ।

रक्तश्यामो भास्करो गौर इन्दुर्नात्युच्चाङ्गो रक्तगौरश्च वक्रः । दूर्वाश्यामो ज्ञो गुरुर्गौरगात्रः श्यामः शुक्रो भास्करिः कृष्णदेहः ॥ ४५ ॥

अर्थ--सूर्य का रक्तश्याम वर्ण, चन्द्रमा का गोरा रंग, मंगल का कमल के समान लाल और गोरा रंग और शरीर छोटा, बुध का दूर्वा के दल के समान रंग, बृहस्पति का गोरा रंग, शुक्र का

श्याम वर्ण अर्थात् न बहुत गोरा न काला, शनैश्चरका काला शरीर जानना ॥ ४५ ॥

ग्रहों का रूप।

मधुपिङ्गलदृक् चतुरस्रतनुः
पित्तप्रकृति सविताऽल्पकचः।
तनुवृत्ततनुर्बहुवातकफः
प्राज्ञश्च शशी मृदुवाक् शुभवाक् ॥४६॥

अर्थ—सूर्य का स्वरूप शहत के रंग के सदृश नेत्र और चौकोना शरीर, पित्त प्रकृति छोटे छोटे और थोड़े केश चंद्रमा शरीर से दुबला, सब अंग गोल, बात पित-प्रकृति बुद्धिमान् और कोमल वाणी, सुन्दर मनोहर नेत्र वाला है। ४६ ॥

क्रूरदृक् तरुणमूर्तिरुदारः
पैत्तकः सुचपलः कृशमध्यः
श्लिष्टवाक् सततहास्यरुचिर्ज्ञः
पित्तमारुतकफप्रकृतिश्च ॥ ४७ ॥

अर्थ—क्रूर दृष्टि, नित्य युवावस्था, उदार चित्त, प्रकृति चंचल स्वभाव, बीच का अंग दुबला अर्थात् पतला, ऐसा मंगल का स्वरूप है, बुध का स्वरूप—सुन्दर, गद्गद वाणी, सदा हँसनेवाला-मसखरा, बात पित्त कफ प्रकृतिवाला जानना ॥ ४७ ॥

बृहत्तनुः पिङ्गलमूर्द्धजेक्षणो
बृहस्पतिः श्रेष्ठमतिः कफात्मकः।
भृगुः सुखी कान्तवपुः सुलोचनः
कफानिलात्मा सितवक्रमूर्द्धजः ॥ ४८ ॥

अर्थ—बहुत लम्बा शरीर और लंबेर केश, भूरे नेत्र, उत्तम बुद्धि, कफ प्रकृति एसा बृहस्पति का स्वरूप हैं, शुक्र का स्वरूप सुखी, सुन्दर कान्ति वाला शरीर, दर्शन योग्य नेत्र, कफ, वात प्रकृति, टेढ़े व सफेद शिर के बाल ऐसा जानना ॥ ४८ ॥

मन्दोऽलसः कपिलदृक्कृशदीर्घगात्रः
स्थूलद्विजः परुषरोमकचोऽनिलात्मा।
स्नाय्वस्थ्यसृक्त्वगथ शुक्रवसा च मज्जा
मन्दाऽर्कचन्द्रबुधशुक्रसुरेज्य भौमाः ॥४९॥

अर्थ—शनैश्चर का स्वरूप—आलसी, कञ्ज नेत्र दुबला और ऊँचा शरीर नाक और दाँत मोटे, रूखे केश, वात प्रकृति वाला कहा है, अब ग्रहों की धातु वर्णन करते हैं-शनि की धातु नस, सूर्य की धातु हड्डी, चंद्रमा की धातु रुधिर, बुध का त्वचा शुक्र की वीर्य, बृहस्पति का मेदा मगलका धातु मज्जा जनना ४९।

केन्द्रेक्षश्रोत्रनसाकपोलहनवो वक्त्रं च होरादं-
यस्ते कण्ठांसकबाहुपार्श्वहृदये क्रोडाननाभि-

स्ततः। वस्तिः शिश्नगुदे ततश्च वृषणावूरू-
ततो जानुनी जंघेऽघ्रीत्युभयत्र वाममुदितैर्द्रे-
ष्काणभागैस्त्रिधा ॥ ५० ॥

अर्थ—जन्म लग्न के द्रेष्काण से तीन भागों में चिह्न आदि होते हैं, जो लग्न का पहला द्रेष्काण हो तो लग्न शिर, दूसरा बारहवाँ घर दोनों नेत्र, तीसरा ग्यारहवाँ घर दोनों कान, चौथा दशवाँ घर दोनों नासिका पाँचवाँ नवाँ घर दोनों गाल, छठाँ आठवाँ स्थान ठोड़ी, सातवाँ घर मुख कहिये और लग्न का दूसरा द्रेष्काण हो तो लग्न कण्ठ, दूसरा बारहवाँ घर दोनों कन्धे, तीसरा ग्यारहवाँ घर दोनों बाहु, चौथा दशवाँ घर दोनों बगल, पाँचवाँ नवाँ घर हृदय, छठाँ आँठवाँ घर पेट, सातवाँ घर नाभि है लग्न का तीसरा द्रेष्काण हो तो लग्न वस्ति (पेडू,) दूसरा बारहवाँ घर लिंग और गुदा, तीसरा ग्यारहवाँ घर वृषण (अण्डकोश), चौथा दशवाँ घर ऊरू, पाँचवाँ नवाँ घर जानु, छठाँ आठवाँ स्थान घुटना, सातवाँ घर चरण जानना, यहाँ लग्न से सातवें घर के आधे भाव पर्यन्त बायाँ अंग जानना और सप्तमार्ध से बारहवें भाव पर्यन्त दाहिना अंग जानना ॥ ५० ॥

तस्मिन्पापयुते व्रणं शुभयुते दृष्टं च लक्ष्मी-
र्दिशेत्स्वर्क्षांशे स्थिरसंयुतेषु सहजः स्यादन्य-
थाऽगन्तुकः। मन्देऽश्माऽनलजोऽग्निशस्त्रविषजो

भौमे बुधे भूर्भुवः सूर्ये काष्ठचतुष्पदेनहिमगौ
शृङ्गयब्जजोऽन्यैः शुभम् ॥ ५१ ॥

अर्थ—पूर्वोक्त द्रेष्काण के विभाग से अंगों को जानकर जिस राशि में पापग्रह हो वहाँ व्रण (फोड़ा फुन्सी घाव) कहना और शुभग्रह युक्त हो वा शुभ ग्रह देखते हों तो चिन्ह आदि कहना, चिह्न कहने से लहसुन, तिल मस्सा आदि कहना, तथा व्रण व चिह्न कहने वाला ग्रह अपनी राशि, अपने नवांश वा स्थिर राशिमें हो तो जन्म ही से चिन्ह कहना, इससे अन्यथा हो अर्थात् चर राशि नवांश में हो तो वह पीछे से चिन्ह होगा, जो शनि व्रण करने वाला हो तो पत्थर या वायु वा अग्नि द्वारा चिन्ह कहना, मंगल हो तो अग्नि हथियार वा वृक्ष द्वारा चिन्ह कहना, बुध हो तो पृथ्वी पर गिरकर व्रण हो जावे, सूर्य हो तो काठ की चोट से वा किसी चौपाये पशु से व्रण कहना चन्द्रमा हो तो सींग वाले पशु से वा जलचर जीव से व्रण आदि कहना, अन्य ग्रह शुभ जानना अर्थात् व्रण करने वाले नहीं जानना । ५१ ॥

समनुपतिता यस्मिन्भागे त्रयः सबुधा ग्रहा
भवति नियमात्तस्यावाप्तिः शुभेष्वशुभेऽपि वा ।
व्रणकृदशुभः षष्ठे देहे तनोर्भसमाश्रिते तिलकमश-
कृद्दृष्टः सौम्यैर्युतश्च स लक्ष्मवान् ॥ ५२ ॥

अर्थ—जिस भाग में बुध सहित तीन ग्रह स्थित हों उस अंग में

शुभ व अशुभ चिन्ह अवश्य होता है, उन ग्रहों में जो ग्रह अधिक बलवान् हो उसकी दशा में चिन्ह वा व्रण जानना छठें घरमें जो पाप ग्रह हों तो देह में शीर्ष, मुख, बाहु इत्यादि चक्र पूर्व लिख चुके हैं उस क्रम से व्रण आदि कहना, पाप ग्रह जो शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो लहसुन आदि चिन्ह करने वाला जानना ॥५२॥

दशमे बुधजीवौ च सूर्यभौमौ च कण्टके ।
तृतीयैकादशे पापे बालकस्य षडंगुलिः ॥ ५३ ॥

अर्थ—दशवें घर में बुध बृहस्पति हो, केन्द्र १।४।७।१० में सूर्य और मङ्गल हो, तीसरे ग्यारवें घरमें पाप ग्रह हो तो बालक के छः अंगुली कहना ॥ ५३ ॥

द्वादशे चन्द्रभौमौ वा वामनेत्रं विनश्यति ।
द्वादशे रविराहू च दक्षचक्षुर्विनाशयेत् ॥ ५४ ॥

अर्थ—बारहवें घरमें चन्द्रमा वा मङ्गल होतो बायां नेत्र नष्ट हो जाता है औ बारहवें स्थानमें सूर्य व राहु होतो दाहिना नेत्र नष्ट होजाताहै५४

अर्कसूनुः कुजो राहुः पञ्चमस्थः प्रसूयते ।
लशुनं वामकुक्ष्यां च गर्गाचार्येण भाषितम् ॥ ५५ ॥

अर्थ-शनि, मङ्गल, राहु ये ग्रह जन्म समय में पांचवें स्थान में हों तो बांई कोखमें लहसुन कहना, ऐसा गर्गाचार्य ने कहा है ॥५५॥

सिंहलग्ने यदा जातो जामित्रे च शनैश्चरः ।
ब्रह्मपुत्रोऽपि संजातो म्लेच्छो भवति बालकः ॥५६॥

अर्थ—जो सिंह लग्न में जन्म हो और सातवें स्थान में शनि हो तो ब्राह्मण के घर में जन्म होने पर भी वह बालक म्लेच्छ होजाता है।। ५६।।

सहजस्थो यदा शुक्रः सिंहे मेषे बृहस्पतिः ।
दशमे रविभौमौ च मूको भवति बालकः ।। ५७ ।।

अर्थ—तीसरे स्थान में जो शुक्र हो, सिंह वा मेष के बृहस्पतिहो, दशवें घर में सूर्य मङ्गल होतो बालक मूक (गूँगा) हो जाता है ।। ५७ ।।

सुतमदननवान्त्यरन्ध्रलग्ने
शुभयुतो मरणाय शीतरश्मिः
भृगुसुतशशिपुत्रदेवपूज्यै
र्यदिबलिभिर्नविलोकितोयुतो वा ।।५८ ।।

अर्थ—पाँचवें, सातवें, नवें, बारहवें आठवें व लग्न इन स्थानों में किसी स्थान में पापग्रह युक्त क्षीण चन्द्रमा हो और चन्द्रमा को बलवान् शुक्र बुध बृहस्पति इनमें से कोई शुभग्रह न देखता हो तो वह बालक मर जावै ।। ५८ ।।

कृष्णपक्षे दिवा जन्म शुक्लपक्षे यदा निशि ।
षष्ठाष्टमे भवेच्चन्द्रः सर्वारिष्टं निवारयेत् ।। ५९ ।।

अर्थ—जो कृष्णपक्ष में दिन को और शुक्लपक्ष में रात्रि को जन्म हो और छठें आठवें स्थान में चन्द्रमा हो तो सब प्रकार के अरिष्टों का निवारण करता है ।। ५९ ।।

चन्द्राष्टमं च धरणीसुतसप्तमं च
राहुर्नवं च शनिजन्म गुरुस्तृतीये ।
अर्कस्तु पञ्च भृगुषष्ठ बुधश्चतुर्थे
जातो न जीवति नरः प्रवदन्ति सन्तः ॥६०॥

अर्थ- चन्द्रमा आठवें स्थान में हो और मंगल सातवें हो, राहु नवम घर में हो, शनि लग्न में हो, बृहस्पति तीसरे घर में हो, सूर्य पाँचवें, शुक्र छठे, बुध चौथे में हो तो बालक नहीं जीवे ऐसा पूर्व आचार्य कहते हैं ॥ ६०

लग्ने शुक्रो बुधो नैव नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः ।
दशमोऽङ्गारको नैव स जातः किं करिष्यति ॥६१॥

अर्थ-जिसके लग्न काल में लग्न में बुध शुक्र न हो और केन्द्र में बृहस्पति नहीं हो, एवं दशम स्थान में मङ्गल न हो तो वह बालक क्या करेगा ! अर्थात् उसका जन्म निरर्थक जानना ॥६१॥

मूर्तौ शुक्रो बुधो यस्तु केन्द्रे चैव बृहस्पतिः ।
दशमोऽङ्गारको यस्य स ज्ञेयः कुलदीपकः ॥६२॥

अर्थ- जिसके जन्म समय शुक्र बुध लग्न में हों और केन्द्र १।४।१० में बृहस्पति हों तथा जिसके दशवें घर में मंगल हो उस बालक को अपने कुल में दीपक के समान जानना ॥ ६२ ॥

लग्नस्थाने यदा सौरिः षष्ठे भवति चन्द्रमाः ।
कुजस्तु सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति ॥६३॥

अर्थ–जो लग्न स्थान में शनि हो, छठ स्थान में चन्द्रमा हो और सातव स्थानमें मंगल हो तो उसका पिता नहीं जीता है ६३॥

षष्ठे च द्वादशे राशौ यदा पापग्रहो भवेत् ।
तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥ ६४ ॥

अर्थ–जो छठें और बारहवें घर में पापग्रह हो तो माता को अरिष्ट जानना दशवें चौथेमें पापग्रह हो तो पिता को अरिष्ट जानना। ६४॥

दशमस्थो यदा भौमः शत्रुक्षेत्रे स्थितो यदि ।
म्रियते तस्य बालस्य पिता शीघ्रं न संशयः ॥६५॥

अर्थ–जो दशम स्थान में मंगल हो और शत्रुकी राशिमें हो तो उस बालक का पिता शीघ्र मर जावे इसमें संशय नहीं है। ६५॥

लग्ने जीवो धने मन्दो रविर्भौमस्तथा बुधः ।
विवाहसमये तस्य बालस्य म्रियते पिता ॥६६॥

अर्थ–लग्नमें बृहस्पति, दूसरे स्थानमें शनि सूर्य मंगल तथा बुध हो तो उस बालक के विवाह समय में उसका पिता मर जावे ॥ ६६ ॥

पातालस्थो यदा राहुश्चेन्दुः षष्ठाष्टमेऽपि च ।
पापदृष्टोऽपि शेषेण सद्यः प्राणहरः शिशोः ॥६७॥

अर्थ–जो पाताल (सातवें)स्थान में राहु हो और छठें, आठवें

घर में चन्द्रमा हो शेष शुभ ग्रह पर पाप दृष्टि हो तो बालक का प्राण शीघ्र हर जावे ॥ ६७ ॥

जन्मलग्ने यदा राहुः षष्ठो भवति चन्द्रमाः ।
जातो मृत्युमवाप्नोति कुदृष्ट्या त्वपमृत्युना ॥६८॥

अर्थ–जो जन्म लग्न में राहु हो और छठवें स्थानमें चन्द्रमा हो, जन्मलग्न पर किसी ग्रह की कुदृष्टि हो तो अकाल मृत्यु हो ॥६८॥

सिंहलग्ने यदा भौमः पञ्चमे च निशाकरः ।
व्ययस्थाने यदा राहुः स जातः कुलदीपकः ॥६९॥

अर्थ–जो सिंह लग्नमें मङ्गल हो और पाँचवें चंद्रमा हो, बारहवें राहु हो तो वह बालक अपने कुल में दीपक होवे ॥ ६९ ॥

लग्ने वा सप्तमे भौमः पञ्चमे च दिवाकरः ।
व्ययस्थाने यदा राहुर्विख्यातो न संशयः ॥७०॥

अर्थ–लग्नमें वा सातवें मङ्गल हो और पाँचवें सूर्य हो और जो बारहवें राहु होतो वह बालक निस्सन्देह जगतमें प्रसिद्ध मनुष्यहो ७०

त्रिभिः स्वस्थैर्भवेन्मन्त्री त्रिभिरुच्चैर्नराधिपः ।
त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासस्त्रिभिरस्तगतैर्जडः ॥ ७१ ॥

अर्थ–जो बालक के जन्म समयमें तीन ग्रह अपने घरमें स्थित हों तो वह बालक मन्त्री हो और तीन ग्रह उच्च के हों तो राजा और तीन ग्रह नीच के हों तो दास हो, तीन ग्रह अस्त हो तो वह बालक जड़ (मूर्ख) हो ॥ ७१ ॥

शनिक्षेत्रे यदा सूर्यो भानुक्षेत्रे यदा शनिः ।
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्देवो रक्षिता यदि ॥ ७२ ॥

अर्थ—जो शनि के घर में सूर्य हो, सूर्य के घर में शनि हो तो बारहवें वर्ष में देव से रक्षित भी बालक मर जावे ॥ ७२ ॥

जन्मलग्ने यदा भौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ।
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्यदि रक्षति शङ्करः ॥ ७३ ॥

अर्थ—जो जन्म लग्न में मङ्गल हो और आठवें घर में बृहस्पति हो तो बारहवें वर्ष में यदि महादेवजी रक्षा करें तो भी बालक मृत्यु को प्राप्त हो जावे । ७३ ॥

षष्ठाष्टमस्तथा मूर्तौ जन्मकाले यदा बुधः ।
चतुर्थवर्षे मृत्युश्च यदि रक्षति शङ्करः ॥ ७४ ॥

अर्थ—जो जन्म समयमें छठें आठवें तथा मूर्ति में बुध हो तो यदि शङ्करजी रक्षा करें तो भी चौथे वर्षमें वह बालक मरजावे।७४।

भौमक्षेत्रे यदा जीवः षष्ठाष्टमु च चन्द्रमाः ।
अष्टवर्षेऽपि मृत्युर्वै ईश्वरो रक्षिता यदि ॥ ७५ ॥

अर्थ—जो मंगलके घरमें बृहस्पति हो और छठें आठवें स्थानमें चन्द्रमा हो तो ईश्वरसे रक्षित भी बालक आठवें वर्षमें मरजावे ।।७५।।

दशमेऽपि यदा राहुर्जन्मलग्ने यदा भवेत् ।
वर्षे तु षोडशे ज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्य च ॥ ७६ ॥

अर्थ—जन्म समय दसवें घर में राहु हो तो बालक की सोलहवें वर्ष में मृत्यु जानना ॥ ७६ ॥

अग्रजातं रविर्हन्ति पृष्ठजातं शनैश्चरः ।
जातं जातं कुजो हन्ति सहजस्थो भवेद्यदि ॥ ७७ ॥

अर्थ—तीसरे स्थान में स्थित सूर्य बड़े भाई का नाश करता है और तीसरे स्थान में स्थित शनैश्चर उसके पीठ पर के भाई को और मंगल तीसरे स्थान में हो तो उसके पीठ पर जो-जो बालक उत्पन्न होता जाय वह नष्ट होता जावे ॥ ७७ ॥

इनाङ्कर्श्चातः शशिमुखगृहान्मातृकथितः ।
कुजाद्भ्रातृस्थानात्सहज इनपुत्राष्टमगृहात् ।
मृतिर्ज्ञात्षष्ठे स्याद्रुज इति क्रमान्मातुलमपि ।
गुरौ पुत्रात्पुत्राः सितसप्तभाद्दारउह्यम् ॥ ७८ ॥

अर्थ—यहाँ ग्रहोंसे ग्रहोंका फल कहते हैं, सूर्यसे नवम स्थान द्वारा पिता सम्बन्धी शुभाशुभ फल का विचार करना, चंद्रमा से चौथे भाव द्वारा माता सम्बन्धी विचार करना, मंगल से तीसरे स्थान द्वारा भाई का विचार करना, शनि से आठवें स्थान द्वारा मृत्यु का विचार करना, बुध से छठें स्थान द्वारा रोग और मामा का विचार करना, बृहस्पति से पाँचवें स्थान द्वारा पुत्र सम्बन्धी शुभाशुभ विचार करना, शुक्र से सातवें स्थान द्वारा स्त्री का शुभाशुभ फल विचारना ॥ ७८ ॥

यद्भावनाथो रिपुरन्ध्ररिष्फे
दुःस्थानपो यद्भवनस्थितो वा ।
तद्भावनाशं कथयन्ति तज्ज्ञाः
शुभेक्षिते तद्भवनस्य सौख्यम् ॥ ७९ ॥

अर्थ—जिस भाव (स्थान का स्वामी ६ । ८ । १२ घर में हो अथवा दुष्ट स्थान ६ । ८ । १२ का स्वामी जिस घर में हो, उस भाव के फलका नाश कहना, जो शुभग्रहों की दृष्टि उस भाव में हो तो उस भाव के सुख को कहै ॥ ७९ ॥

यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा
सौम्यैर्वा स्यात्तस्य तस्यास्ति वृद्धिः ।
पापैरेवं तस्य भावस्य हानि
र्निर्देष्टव्या पृच्छतां जन्मतो वा ॥ ८० ॥

अर्थ—जिस-जिस भावका स्वामी शुभग्रह अपने स्थान को देखता हो, अपने स्थान में स्थित हो, उस-उस भाव की वृद्धि करता है। एवं जिस-जिस भाव का स्वामी पापग्रह हो और उस भाव को देखता हो अथवा उस भाव में स्थित हो तो उस-उस भाव की हानि करता है, यह प्रश्न समय अथवा जन्म समय में देखना ॥ ८० ॥

इति श्रीसुमेरुपुरनिवास्यवसथीत्युपाह्व रघुनाथ शर्मा
शास्त्रिसंगृहीत स्वोपज्ञं भाषा व्याख्यालंकृतं
लग्नजातकं समाप्तम् ।

मुद्रक—जगन्नाथ प्रिंटिंग, ए. ३।१ मच्छोदरी पार्क, वाराणसी—१